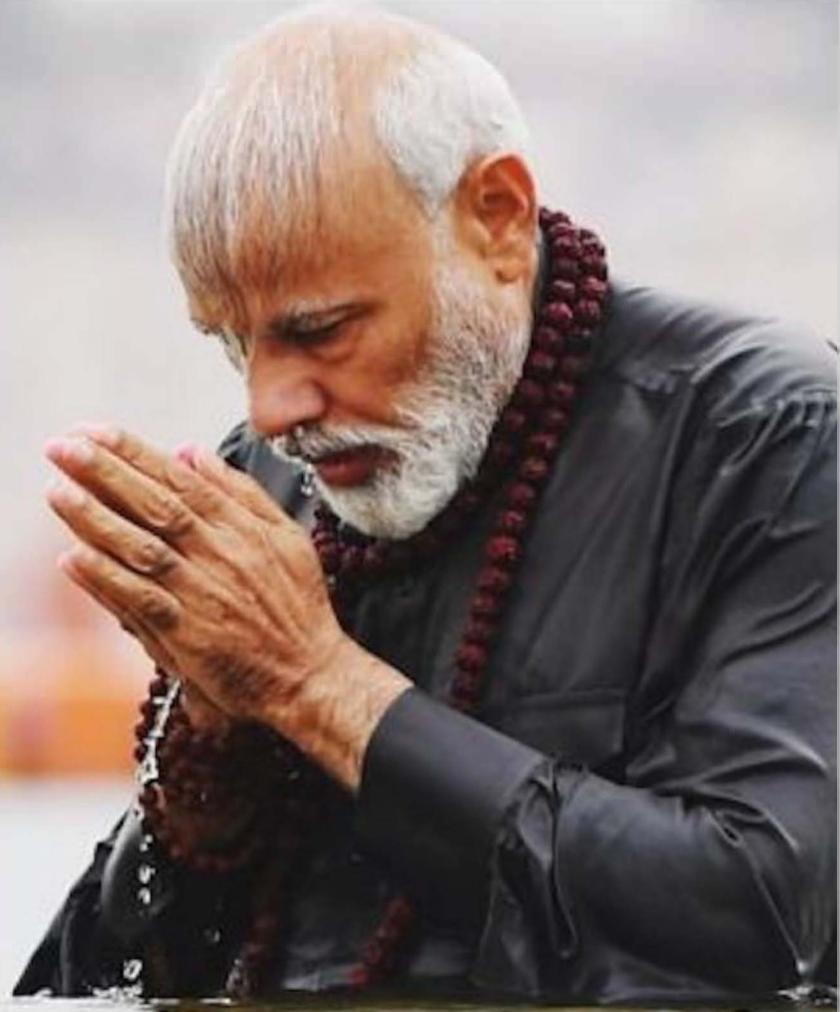


हमारी गंगा की स्थिति दयनीय है। दूसरों
के लिए गंगा नदी हो सकती है लेकिन
हमारे लिए गंगा हमारी माता है। हमारी
संस्कृति का हिस्सा है।

- पीएम नरेंद्र मोदी



गंगा का परिचय







**GNAMAMI
GANGE**

अवलोकन

परियोजना का नाम

गंगा नदी, सम्बंधित व्यक्तियों के लिए मिश्रित क्षमता निर्माण कार्यक्रम

कार्यक्रम

नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत

संस्था के लिए निर्मित

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन

सृजनकर्ता

भारतीय लोक प्रशासन संस्थान

विशिष्ट ध्यान

कॉलेज के छात्रों के लिए अध्ययन मॉड्यूल श्रृंखला

परियोजना टीम

प्रो विनोद कुमार शर्मा (परियोजना अन्वेषक)

डॉ. श्यामली सिंह (परियोजना अन्वेषक)

सुश्री चारु भनोट

सुश्री कनिष्का शर्मा

सुश्री इमराना अख्तर

सुश्री कनिका

सुश्री शोभा राठौर

कवर पेज की छवि - ऋषिकेश में
लिवेणी घाट पर गंगा नदी

बाईं छवि - टहरी बांध, उत्तराखंड
स्रोत: अल्ताफ कादरी

संदेश



मेरे युवा साथियों,

"छात्र वे हाथ हैं जिनके माध्यम से हमें स्वर्ग की समदर्शिता प्राप्त होती है।" हेनरी वार्ड बीचर के उपरोक्त उदाहरण ने, मुझे हमारी पवित्र गंगा नदी के कायाकल्प और संरक्षण के लिए आपके साथ हाथ मिलाने के लिए प्रेरित किया है। मैं समाज में आपकी भूमिका पर विचार करता हूँ और मानता हूँ कि इस अत्यंत कठिन कार्य में आपकी भागीदारी से हमारी नदी की वर्तमान स्थिति में सुधार हो सकता है।

गंगा नदी के अवतरण को सार्थक बनाने के लिए आपको गंगा नदी, सम्बंधित व्यक्तियों के लिए मिश्रित क्षमता निर्माण कार्यक्रम, नमामि गंगे के अंतर्गत इस परियोजना का हिस्सा बनाया जा रहा है। गंगा हमारी संस्कृति के मूल में निवास करती है और यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि हमारी राष्ट्रीय नदी के सामने आने वाली जटिल चुनौतियों के बारे में आपकी जागरूकता, बड़े पैमाने पर समाज के व्यवहार में परिवर्तन ला सकती है।

मैं एक छात्र की क्षमता पर विचार करता हूँ जोकि भविष्य में स्वच्छ सांस लेने की दिशा में योगदान करता है। गंगा नदी के प्रति अपनत्व की भावना को बढ़ावा देने के लिए आपकी भावनाओं, विचारों और जागरूकता के साथ मिलना मेरी आशा और अपेक्षा है। मुझे आपकी जिज्ञासा और क्षमता पर विश्वास है और आशा है कि हम सब मिलकर सबकी मानसिकता को बदल सकते हैं और इसे व्यावहारिक रूप से लागू कर सकते हैं।

इस पुस्तिका के माध्यम से, आपको गंगा नदी और उनके बेसिन की यात्रा पर ले जाया जाएगा। मैं आपके मस्तिष्क पर एक छवि बनाना चाहता हूँ और आप में से प्रत्येक को जिम्मेदार वयस्कों में ढालना चाहता हूँ। सीखने की इस प्रक्रिया को मानचिह्नों, प्रश्नोत्तरी और पहेलियों के समावेश के साथ आपकी प्रभावी भागीदारी के लिए तैयार किया गया है।

सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी
महानिदेशक
भारतीय लोक प्रशासन संस्थान

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो,

वैश्विक तथा धार्मिक स्तर पर, जल को प्राकृतिक शुद्धता का प्रतिक माना जाता है | भारतीय नदियां, कई लोगों के लिए जीवन रेखा होने के अलावा, परमात्मा की अभिव्यक्त के रूप में मानी जाती है। वे राज्य को दूसरे राज्य से, अतीत को वर्तमान से जोड़ती हैं। गंगा हमारी पवित्र नदी है जिसका सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण इतिहास है। यह सिर्फ एक नदी नहीं है, अपितु एक देवी है, जो हमारे पापों को दूर करने वाली है; यह हमारी माँ है।

गंगा नदी समृद्ध भारत के अतीत का हिस्सा है। यह शुद्धता और पवित्रता की प्रतीक है। यह देश की सामूहिक चेतना में एक केंद्रीय स्थान रखती है, यही कारण है कि गंगाजल को पवित्र जल माना जाता है। गंगा नदी न केवल असाधारण रूप से समृद्ध जैव विविधता को बढ़ावा देती है, बल्कि यह भारत की आजीविका में भी बहुत अधिक योगदान देती है...

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि नदी के गौरवगान और सम्मान के बावजूद, यह असंख्य स्थानों पर अति दूषित हो गयी है। मानवीय लालच और दुराचार ने नदी की गुणवत्ता को खराब कर दिया है। यह वास्तव में चिंता का विषय है कि नदी ने पिछले कुछ वर्षों में अपने परवाह को बदल दिया है; इसके साथ ही, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एन.एम.सी.जी) ने, मौजूदा और आने वाली पीढ़ियों के लाभ के लिए नदी को स्वच्छ, शुद्ध और स्वस्थ रखने के लिए कदम बढ़ाया है। यह भारतीय लोक प्रशासन संस्थान के लिए गवर की बात है कि नमामि गंगे परियोजना ने गंगा नदी, सम्बंधित व्यक्तियों के लिए मिश्रित क्षमता निर्माण कार्यक्रम हमें सौंपा है।

गंगा नदी के संरक्षण और कायाकल्प के उद्देश्य से, छात्रों को हमारी राष्ट्रीय नदी के साथ समन्वय बिठाने के लिए यह शरुंखला तैयार की गई है। इस पुस्तक में गंगा बेसिन में एवं उसके आसपास की चुनौतियों तथा अवसरों को दिखाते हुए गंगा नदी के समग्र दृष्टिकोण को परस्तुत किया गया है।



विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रोफेसर,
भारतीय लोक प्रशासन संस्थान



श्यामली सिंह
सहायक प्रोफेसर,
भारतीय लोक प्रशासन संस्थान



गंगा नदी की यात्रा

गंगा नदी, जिसे आधिकारिक तौर पर गंगेस के रूप में भी जाना जाता है, गंगा नदी भारतीय उपमहाद्वीप में उत्तर भारत के गंगा के मैदानों से पूर्व की ओर बहने वाली एक बड़ी नदी प्रणाली है।, सुंदरबन और बांग्लादेश में अपने विशाल डेल्टा के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में निर्वहन करते हुए 2,525 किलोमीटर की दूरी तय करती है। इस पथ के दौरान, कई महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ जल निकासी धाराओं को जोड़कर गंगा को निर्वहन माता के हिसाब से दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी नदी बनाती हैं। पहली सबसे बड़ी अमेज़ॉन नदी है तथा दूसरी सबसे बड़ी नदी कांगो नदी है। गंगा के तटिया क्षेत्र सबसे बड़े हैं और गंगा नदी को जल उत्तरी उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल को सिंचता है। भारत में स्थित गंगा नदी के तट पर कानपुर, पटना, कन्नौज, काशी, इलाहाबाद, वाराणसी और कोलकाता जैसे कई महत्वपूर्ण शहर शामिल हैं। ये शहर बहुत सारे घरेलू और औद्योगिक प्रदूषण के कारक बने, जिसने "पवित्र" गंगा को प्रदूषित कर दिया। गंगा के पर्यावरण की स्थिति का 1986 में बहुत विरोध हुआ और सरकार द्वारा गंगा नदी को पुनर्जीवित करने के लिए गंगा कार्य योजना को लागू किया। गंगा नदी को अनंत काल से भारतीयों के लिए पवित्र माना जाता है और इसे गंगा देवी के रूप में पूजा जाता है। खासकर हरिद्वार, वाराणसी और प्रयागराज (त्रिवेणी का संगम) जैसे शहरों में हिंदू तीर्थयात्रा करते हैं। गंगा के तट पर कई धार्मिक अनुष्ठान होते हैं। गंगा नदी भारत के ग्यारह राज्यों को उद्योग, सिंचाई और पीने का पानी उपलब्ध कराती है।

उपरोक्त छवि: यमुना नदी से इलाहाबाद किले की दीवार

"मुझे विश्वास है कि गंगा के तट से हमें सब कुछ प्राप्त हुआ है - खगोल विज्ञान, ज्योतिष, अध्यात्म, आदि। यह ध्यान रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि लगभग 2500 साल पहले पाइथागोरस ज्यामिति सीखने के लिए समोस में गंगा से गए थे"

फ्रांसिस एम. वोल्टेयर

नदी प्रणाली

विभिन्न दिशाओं से बहने वाली छोटी-छोटी धाराएँ मिलकर मुख्य नदी बनाती हैं, जो अंततः एक बड़े जल निकाय में जैसे झील या समुद्र या महासागर में गिरती है।

जल निकासी

किसी क्षेत्र की नदी प्रणाली

सहायक निदयां

एक नदी या एक बड़ी नदी में बहने वाली धारा या झील

डेल्टा

नदियाँ अपना पानी और तलछट को किसी अन्य जल निकाय, जैसे महासागर, झील, या किसी अन्य नदी में खाली कर देती हैं।

जल विभाजन

एक पहाड़ जैसे ऊंचे क्षेत्र या पतली घाटियों को अलग करना

हेडस्ट्रीम

एक धारा जो नदी का स्रोत है।



ऊपर की छवि: जल विभाजन के संबंध में गंगा बेसिन का स्थान

गंगा नदी प्रवाह

गंगा नदी भारत के उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों से होकर दक्षिण-पूर्व में बहती है। भारतीय उपमहाद्वीप को पार करते हुए और मध्य बांग्लादेश से बहते हुए शक्तिशाली ब्रह्मपुत्र और मेघना नदी में विलय करती है। पद्मा नदी के रूप में बहने वाला पानी बंगाल की खाड़ी में मिलता है, जो 354 वर्ग किमी चौड़ा एक सामान्य डेल्टा बनाता है। गंगा नदी के मैदान दुनिया के सबसे उपजाऊ और भारी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक है। उत्तराखंड के हिमालयी ग्लेशियर पानी के स्रोत हैं और भागीरथी नदी के प्रवाह में उतार-चढ़ाव करते हैं। गौमुख को लगभग 4000 मीटर की ऊंचाई पर एक निर्जन स्थान के रूप में वर्णित किया गया है और यह नदी का उद्गम स्थल है। गंगोत्री नदी से तेईस किलोमीटर दूर, सड़क मार्ग से पहला शहर गौमुख है हर साल दुनिया भर से हजारों की संख्या में सैलानी गंगोत्री आते हैं। देवप्रयाग में नदी का वह स्रोत जो अलकनंदा नदी का अंश है वह ही उत्तराखंड, हिमालय में गंगा नदी को निर्मित करता है इसके अलावा, गंगा नदी हिमालय की चाटी से होकर उत्तरी भारत के मैदानी इलाकों में जाती है। मैदानी इलाकों में पहला शहर हरिद्वार है, जो भारत के उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के माध्यम से दक्षिण-पूर्व में बहती है। पवित्र प्रयागराज, जिसे त्रिवेणी संगम भी कहा जाता है, जहां यमुना, सरस्वती और गंगा एक साथ मिलती हैं। गंगा कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, पटना और कोलकाता सहित भारत के कुछ सबसे अधिक आबादी वाले शहरों से होकर गुजरती है। भागीरथी से 100 मील पूर्व दिशा में, यमुना, गंगा नदी के समानांतर बहती है तथा गंगा में विलीन होने से पहले यह नदी दक्षिण में बहती है।

नदी में पूर्व से शुरू होने वाली कई प्रमुख धाराएं हैं, जहां तमसा नदी (जिसे टोंस भी कहा जाता है), गंगा नदी से मिलती है जो कैमूर रेंज से उत्तर की ओर बहती है। दक्षिण की ओर बहते हुये तमसा और गोमती नदी आपस में मिलती है। फिर घाघरा नदी (करनाली नदी), जो नेपाल के हिमालय से दक्षिण दिशा की ओर बहती है, इसमें मिलती है जो की गंगा नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है। घाघरा नदी से संगम के बाद गंगा नदी दक्षिण में सोन नदी से मिलती है। गण्डकी नदी, कोसी नदी, नेपाल से उत्तर की ओर बहती हुई आपस में मिलती है। घाघरा (करनाली) और यमुना नदी के बाद कोसी नदी गंगा नदी की तीसरी सबसे बड़ी सहायक नदी है।

दायी छवि

अध्ययन क्षेत्र को दर्शाने वाले गंगा बेसिन का आधार मानचित्र।



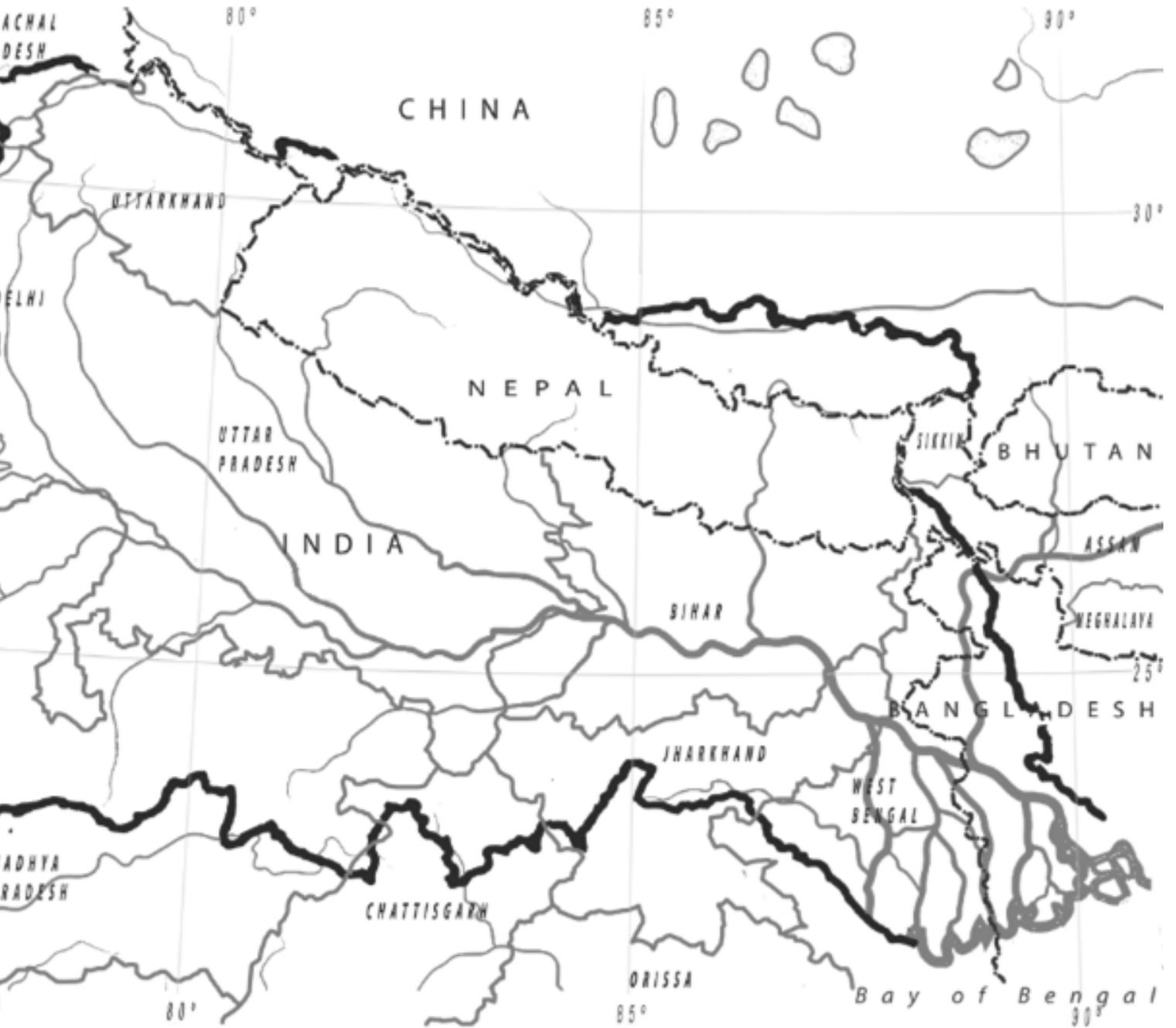
अधिक जानकारी के लिए



स्कैन कोड

"गंगा मेरे लिए भारत के यादगार अतीत का प्रतीक है जो वर्तमान में बहती रहती है और भविष्य के सागर की ओर बहती है।"

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू



गंगा बेसिन एक झलक में

देश	भारत, बांग्लादेश
प्रमुख राज्य	उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल
सीमा से जुड़े राज्य	हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, दिल्ली, मध्य प्रदेश
सहायक नदियां	बायां किनारा: रामगंगा, शारदा, घाघरा, राप्ती, सरयू, गोमती, घंडक, कोसी, मेघना, ब्रम्हपुत्र दायां किनारा: यमुना, चंबल, बेतवा, केन, बन्ना, सोन, रिहंद, मयूर्यक्षी, बराकर, कसाई, हल्दी, दामोदर
लंबाई	2,525 किमी (1,569 मील)
बेसिन का क्षेत्रफल	1,080,000 वर्ग किमी (416,990 वर्ग मील)

गंगा नदी का उदय

गंगा नदी और उसका महत्व, भारतीय सभ्यता के अनेक शास्त्रों में प्रकाशित है। गंगा नदी का इतिहास, संस्कृति और लोगों में हुए परिवर्तनों का सक्षय रहा है।

गंगा नदी और उसके पृथ्वी पर आगमन की पौराणिक कथाएं हैं। प्राचीन शास्त्रों के अनुसार एक राजा सगर थे जिनके साठ पुत्र थे। उनके पुत्रों को संत कपिल मुनि ने जला दिया था राजा की पूजा से एक घोड़ा चुराने के लिए उन्हे धोखे से दोषी ठहराया गया था। राजा सगर तब अपने पुत्रों को पुनः प्राप्त करना चाहते थे और फिर उन्होंने कई संतों से परामर्श किया। संतों ने सुझाव दिया कि पवित्र गंगा को स्वर्ग से बुलाना चाहिए और उनके पुत्रों की राख को मोक्ष प्राप्त करने के लिए गंगा में विसर्जित किया जाना चाहिए। वर्षों की पूजा के बाद, भगवान ब्रह्मा ने गंगा को पृथ्वी पर ले जाने के लिए राजा सगर की इच्छा को पूरा किया। भगवान ब्रह्मा जानते थे कि गंगा का वेग पृथ्वी के लिए अत्याधिक है इस कारण से पहले गंगा को भगवान शिव के मस्तक पर छोड़ा गया। गंगा केशों में उलझी हुई थी क्योंकि भगवान शिव उग्र और चंचल स्वभाव के थे। राजा सगर ने फिर से भगवान शिव की पूजा की तो उन्होंने पवित्र देवी को पृथ्वी पर अवतरित किया। तब से गंगा बह रही है तथा असंख्य लोगों द्वारा वह पूजनीय है।

जल विज्ञान

पृथ्वी के जल के गुण और विशेष रूप से भूमि के संबंध में इसकी गति, तथा संबंधित विज्ञान की शाखा।

भूगर्भशास्त्र

विज्ञान, जो पृथ्वी की भौतिक संरचना और पदार्थ, उनके इतिहास और उन पर कार्य करने वाली प्रक्रियाओं से संबंधित है।

आर्द्रभूमि

मार्श का क्षेत्र, फेन, पीटलैंड, या पानी के क्षेत्र, चाहे प्राकृतिक या कृत्रिम, स्थायी या अस्थायी, पानी के साथ स्थिर या बहने वाला, ताजा, खारा या नमक, समुद्री पानी के क्षेत्र सहित, जिसकी गहराई कम ज्वार पर छः मीटर से अधिक नहीं होती है।

अधिक जानकारी के लिए



स्कैन कोड

जल विज्ञान

गंगा नदी में पानी का मुख्य स्रोत ग्लेशियर हैं। 525⁽⁶⁾ बिलियन क्यूबिक मीटर (बीसीएम) के विस्तार के साथ गंगा सतही जल का मूल्यांकन एक संसाधन के रूप में किया गया है। प्रमुख सहायक नदियाँ, जो वार्षिक जल उत्पादन में आधे से अधिक का योगदान करती हैं, वे हैं यमुना, सोन, घाघरा और कोसी। गंगा सतह प्रतिशत प्रवाह को वाष्पीकरण, उपसतह प्रवाह और अपवाह के बीच विभाजित किया गया है। वाष्पीकरण की मात्रा तीस प्रतिशत है, उपसतह बीस प्रतिशत के रूप में विद्यमान है, और शेष पचास प्रतिशत अपवाह के रूप में विद्यमान है। गंगा में वार्षिक बाढ़ इसकी विशेषता है इसलिए 0.5 से 2 किमी के बाढ़ के मैदानों को हमेशा बनाए रखा जाता है। गंगा नदी का जल विज्ञान चक्र दक्षिण-पश्चिम मानसून पर निर्भर करता है। वर्षा का प्रमुख योगदान जून से सितंबर के महीनों तक होता है। इसका धारा प्रवाह मौसमी है और प्रवाह दिसंबर से मई के महीनों में कम से कम होता है और यह हरिद्वार-इलाहाबाद खंड में सबसे कम देखा जाता है।

गंगा की विशेषताएं



छवि-गंगा के जल विज्ञान का चित्रण

गंगा नदी के मार्ग में ऐतिहासिक परिवर्तन

गंगा नदी के डेल्टा में, कई विशाल जलमार्ग मिलते हैं, इसमें अव्यवस्थित नहर के संगठन को संयोजित और विभाजित दोनों करते हैं। दो सबसे बड़े जलमार्ग, गंगा और ब्रह्मपुत्र, दोनों वितरण जलमार्ग में विभाजित हो गए। वर्तमान नदी आम तौर पर इस स्थिति के लिए तैयार नहीं की गयी थी। गंगा डेल्टा ने अतीत में साधन बदल दिये थे और अब फिर से महत्वपूर्ण तरीकों से जलमार्ग के संगठन को समायोजित कर रहा है।

12वीं शताब्दी से पहले, भागीरथी-हुगली गंगा नदी की प्राथमिक नहर थी और पद्मा एक छोटा रिसाव-संसाधन था। समुद्र के मुहाने तक गंगा के प्रवाह की निगरानी आदि गंगा द्वारा की जाती थी जबकि वर्तमान में यह हुगली नदी द्वारा की जाती थी। 12वीं और 16वीं शताब्दी के बीच हुई प्रगति के कारण भागीरथी-हुगली और पद्मा नहर भी गंगा नदी के लिए मौलिक नहर के रूप में विकसित हुए। 18वीं शताब्दी के अंत तक पद्मा, गंगा नदी की मुख्य शाखा बन चुकी थी। इन परिणामों से गंगा की दिशा में बदलाव आया क्योंकि इसने बंगाल की खाड़ी में बहने से पहले मेघना नदी और ब्रह्मपुत्र नदी के साथ एक डेल्टा का निर्माण किया था।

इसके बाद 18वीं शताब्दी के अंत में गंगा नदी से ब्रह्मपुत्र नदी का मार्ग बदल गया। वर्ष 1787 में, गंगा बेसिन ने तीस्ता नदी में एक बड़ी बाढ़ का अनुभव किया और नदी ब्रह्मपुत्र में शामिल होने के लिए पूर्व में बहती हुई, ब्रह्मपुत्र नदी के मार्ग को दक्षिण की ओर स्थानांतरित कर दिया। ब्रह्मपुत्र की इस नहर का नाम जमुना नदी रखा गया। पुराने ब्रह्मपुत्र और मेघा का संगम स्थल लांगलबंध के खंड में स्थित है और हिंदू आबादी के लिए पवित्र स्थान है।

अधिक जानकारी के लिए



स्कैन कोड

प्रजातियां

जीवित जीवों का एक समूह जिसमें एक तरह के व्यक्ति शामिल होते हैं जो जीनों का आदान-प्रदान करने या इंटरब्रीडिंग करने में सक्षम होते हैं।

लुप्तप्राय प्रजातियां

किसी जानवर या पौधे की प्रजाति जो गंभीर रूप से विलुप्त होने के खतरे में है।

आर्द्रभूमि

रामसर कन्वेंशन अपने अनगिनत लाभों और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए आर्द्रभूमि के महत्व को परिभाषित करता है। गंगा बेसिन में इक्कीस रामसर आर्द्रभूमि हैं जो कि अंतरराष्ट्रीय महत्व रखते हैं। गंगा बेसिन में कई आर्द्रभूमि हैं जिनमें अठारह प्रमुख आर्द्रभूमि हैं जो सीधे गंगा नदी के साथ जुड़ी हुई हैं। राज्यवार सूची इस प्रकार है-

- उत्तर प्रदेश - नरोरा बांध, लाखबहोसी वन्यजीव अभयारण्य, समसपुर पक्षी अभयारण्य और सुरहा ताल वन्यजीव अभयारण्य
- बिहार - कुशौला नदी का मार्ग और दियारा बाढ़ का मैदान, मोरा महानंदा ताल, गोगाबिल पक्षी विहार, भागारबील और बलदियाचौर, विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभयारण्य, मोरवे जलाशय, खबर ताल, सालाह चौर
- पश्चिम बंगाल - फरक्का बैराज, नया बांध आर्द्रभूमि परिसर
- उत्तराखंड - टिहरी बांध, झिलमिल झील और बाणगंगा
- झारखंड - उधुवा झील पक्षी अभयारण्य

गंगा की विशेषताएं



छवि - गंगा की आर्द्रभूमि का चित्रण



छवि - घाट के वाराणसी

गंगा नदी के जीवन रूप

गंगा बेसिन 2000 जलीय प्रजातियों को जीवन देती है।⁽⁸⁾ गंगा बेसिन में दुर्लभ और संकटग्रस्त प्रजातियों की एक विस्तृत विविधता उपस्थित है। इनमें गंगोटिक डॉल्फिन (प्लैटनिस्टा गैंगेटिका), ऊदबिलाव की तीन प्रजातियाँ⁽⁹⁾ शामिल हैं जो कि चिकना-लेपित ऊदबिलाव (लुट्रोगालेपर्सिपिसिलटा), यूरोशियन ऊदबिलाव (लुट्रालुट्रा) और छोटे पंजे वाला ऊदबिलाव (एनीक्ससिनरेस), गंभीर रूप से लुप्तप्राय घड़ियाल (गेवियलिसगैंगेटिकस) है। दलदली मगरमच्छ (क्रोकोडायलस्पलुस्ट्रिस), एस्टुअरीन मगरमच्छ (क्रोकोडायलस्परोसस) और मीठे पानी के कछुओं की कम से कम बारह प्रजातियाँ⁽⁹⁾, जिनमें गंभीर रूप से लुप्तप्राय बटागुर कछुआ शामिल हैं। गंगा में एक सौ तैतालीस अलग-अलग मीठे पानी की मछली प्रजातियाँ हैं, जिनमें गंभीर रूप से लुप्तप्राय गंगा शार्क (ग्लाइफिस गैंगेटिकस), गंगोटिक स्टिंग्रे (हिमंतुरा फ्लुविटिलिस), गोल्डन महासीर (टोर पुत्तोर) और हिल्सा (तेनुलोसा इलीशा) शामिल हैं। गंगा का मैदान विभिन्न प्रकार के भूमि उपयोग में सौ पक्षियों का संरक्षण करता है। गंगा डॉल्फिन भारत का राष्ट्रीय जलीय जंतु है।



छवि - गंगा के जीवन स्वरूपों का चित्रण



स्वच्छ गंगा की ओर

गंगा बेसिन को मुख्य रूप से जल प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, शहरीकरण, घातीय जनसंख्या वृद्धि और अनियमित ट्यूबवेल जैसे विभिन्न कारकों के कारण गंभीर समस्यायें हैं। अरबों लोग गंगा नदी पर निर्भर हैं और नदी के प्रदूषित होने से भारत के उत्तरी मैदानों में पानी की गंभीर कमी हो जाएगी। नदी प्रदूषण के कारण अप्रत्यक्ष स्वास्थ्य प्रभाव भी अपरिहार्य होंगे। केंद्र सरकार ने स्थिति को देखते हुए एकीकृत गंगा संरक्षण मिशन की परिकल्पना और विकास किया है।

मौजूदा चल रहे प्रयासों को मजबूत करते हुए गंगा नदी की कायाकल्प की ओर अग्रसर किया गया है। नमामि गंगे अल्पावधि में गंगा नदी की सफाई पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ सात प्रमुख क्षेत्रों को एक व्यापक दृष्टि से भी देखता है। प्रवाह का रखरखाव, नदी का तट विकास, क्षमता निर्माण, अनुसंधान और निगरानी, जैव विविधता संरक्षण, संचार और सार्वजनिक पहुंच इनमें से प्रमुख है।

ऊपर दृश्यायी हुई छवि

यह छवि कानपुर शहर के उत्तर में बिठूर के घाट से गंगा नदी को दशारता है।

इसके बारे में सोचो

नीचे देखें:

1. गंगा की उत्पत्ति की स्थिति

3. तीन निदियों का संगम,

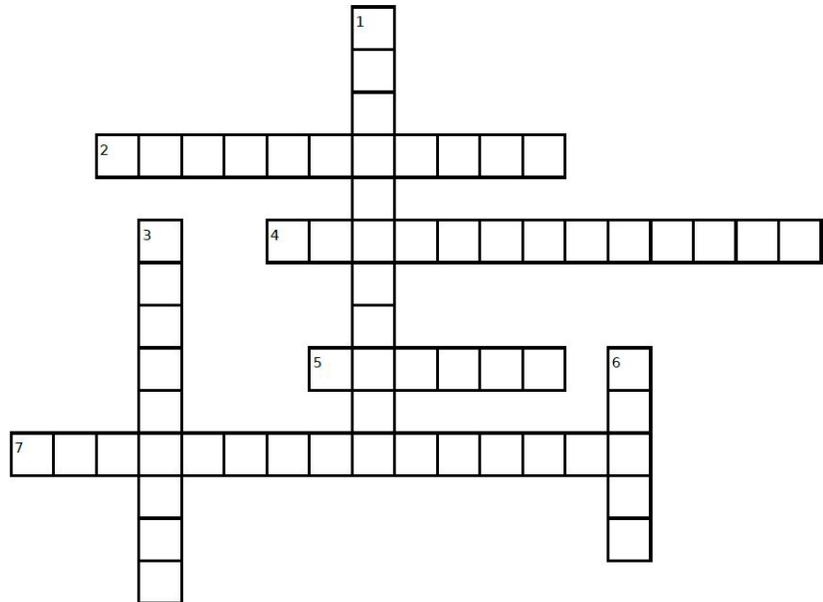
6. निवरहन मातरा केहि साब से तीसरी सबसे बड़ी नदी

आर - पार:

2. लूवियल सेगमेंट गौमुख से हरिद्वार तक

4. 1,080,000 वगर किमी

5. गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी



ममजेदार तथ्य

गंगा नदी ताजे पानी की डॉल्फिन और गंगा शार्क का भी घर है। यह दोनों ही लुप्तप्राय प्रजातियाँ हैं जिनमें गंगा शार्क गंभीर रूप से संकटग्रस्त है।

डीएस भार्गव ने अपने 3 साल के अध्ययन के दौरान यह भी पाया कि नदी इस दुनिया में किसी भी अन्य नदी की तुलना में अपने स्तर की जैव रासायनिक ऑक्सीजन की मांग को तेजी से कम करने में सक्षम है।

गंगा नदी पूरी दुनिया में सबसे बड़ी सबमरीन फैन है, जो 3000 किमी की लंबाई और 1000 किमी की चौड़ाई में फैली हुई है।

गंगा नदी प्रणाली पृथ्वी पर एकमात्र ऐसी प्रणाली है जिसमें मीठे पानी की डॉल्फिन और शार्क दोनों हैं।

यह लंबाई के हिसाब से दुनिया की 34वीं सबसे लंबी नदी है।

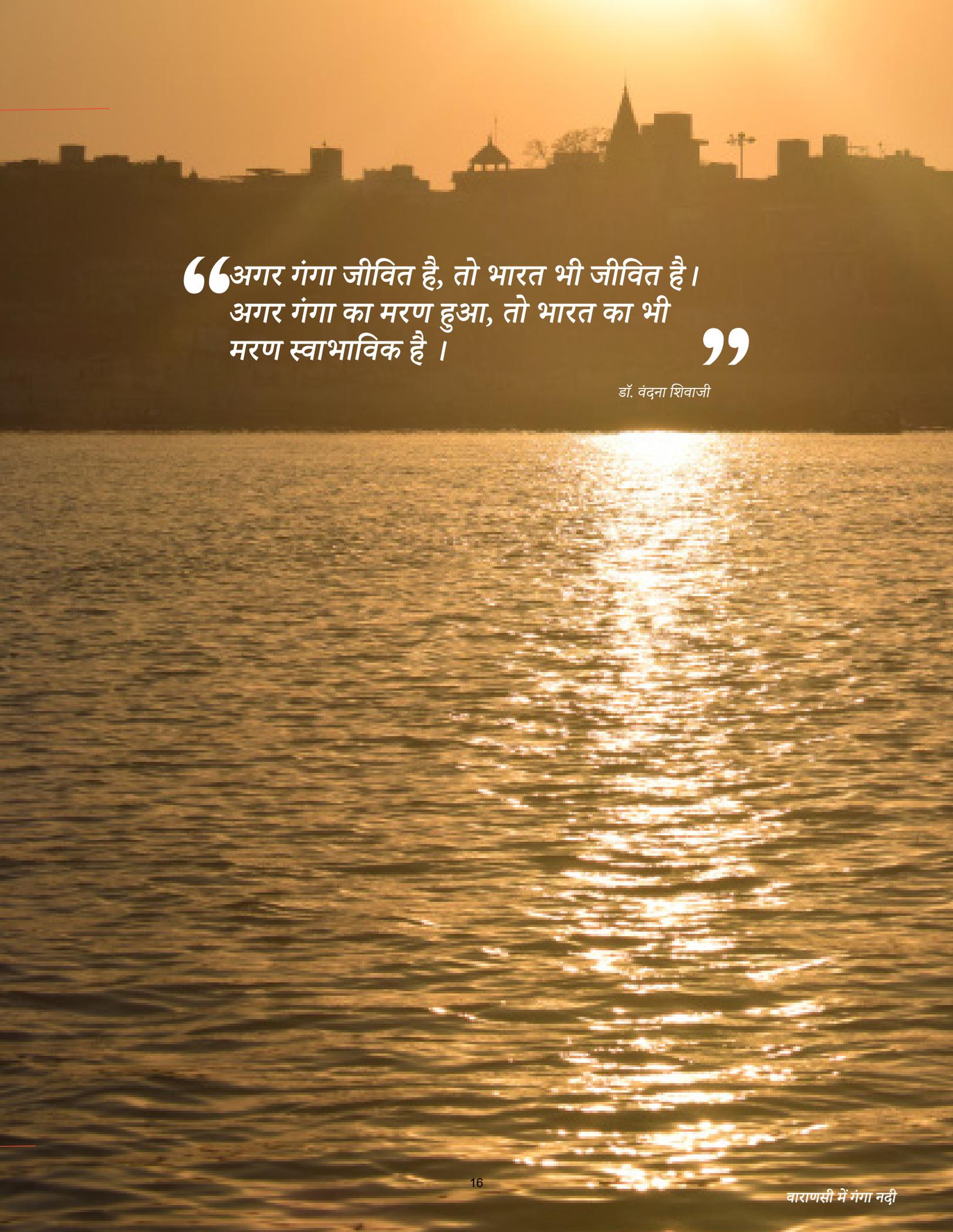
गंगा नदी का डेल्टा दुनिया का सबसे बड़ा डेल्टा है, जिसे सुंदरबन के रूप में जाना जाता है, और इसे 1997 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

सरकार ने रविवार को नई दिल्ली में कहा कि प्रयागराज कुंभ मेला 2019 ने सबसे बड़ी भीड़ प्रबंधन, सबसे बड़े स्वच्छता अभियान के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में जगह बनाई है और सार्वजनिक स्थलों की सबसे बड़ी चिक्कारी अभ्यास किया गया।

गंगा बेसिन 1 मिलियन वर्ग किलोमीटर (386,000 वर्ग मील) से अधिक में फैली हुई है।

ग्रंथ सूची

1. अली, जे.आर. और एचिसन, जे.सी., 2005. ग्रेटर इंडिया। अथर्साइंस रिव्यूज, 72(3-4), पीपी.169-188।
2. डेरिक ओ. लॉड्रिक और नफीस अहमद, 2020। गंगा नदी, एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका; <https://www.britannica.com/place/Ganges-River>
3. हॉपकिंस, डी.जे. और स्टाफ, M.W., 1997। मरियम-वेबस्टर का भौगोलिक शब्दकोश। मेरिएम वेबस्टर।
4. हॉवेल, डी.जी. और नॉमार्ड डब्ल्यू.आर., 1982। पनडुब्बी प्रसंस्कारों की तलछट। बलुआ पत्थर निक्षेपण वातावरण, 31, पीपी.365-404।
5. जैन, एस.के., अग्रवाल, पी.क और सिंह, वी.पी., 2007. भारत के जल विज्ञान और जल संसाधन (वॉल्यूम 57)। स्प्रिंगर विज्ञान और व्यापार मीडिया।
6. जैन, एस.के., अग्रवाल, पी.क और सिंह, वी.पी., 2007. भारत के जल विज्ञान और जल संसाधन (वॉल्यूम 57)। स्प्रिंगर साइंस एंड बिजनेस मीडिया।
7. प्रकाश, बी., कुमार, एस., राव, एम.एस., गिरी, एस.सी., कुमार, सी.एस., गुप्ता, एस. और श्रीवत्सव, पी., 2000. पश्चिमी गंगा के मैदानी इलाकों में होलोसीन टेक्टोनिक मूवमेंट्स और स्ट्रेस फील्ड। करंट साइंस, पीपी.438-449।
8. <https://nmcg.nic.in/> से लिया गया:
9. सांघी, आर. और कौशल, एन., 2014. सीमैप्स के माध्यम से हमारी राष्ट्रीय नदी गंगा का परिचय। हमारी राष्ट्रीय नदी गंगा में (पीपी। 3-44)। स्प्रिंगर, चाम।
10. सांघी, आर., 2014. हमारी राष्ट्रीय नदी गंगा। स्प्रिंगर प्रकाशन, स्विट्ज़रलैंड



“अगर गंगा जीवित है, तो भारत भी जीवित है।
अगर गंगा का मरण हुआ, तो भारत का भी
मरण स्वाभाविक है।”

डॉ. वंदना शिवाजी